International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management and Law
ISSN : 3048-8427
VOL. 1, ISSUE 1, JULY-SEPTEMBER 2024
Available Online : https://ijaescml.com/

भागलपुर जिले में ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वितरण एवं उसकी प्रवृत्तियाँ : 2001–2011 का तुलनात्मक अध्ययन

काजल भारती

सारांश

यह शोध कार्य भागलपुर जिले में 2001 से 2011 के मध्य ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वितरण, वृद्धि दर, संरचनात्मक परिवर्तन तथा शहरीकरण की प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। जनगणना 2001 एवं 2011 के आँकड़ों के आधार पर यह पाया गया कि दशक के दौरान कुल जनसंख्या में लगभग 24.2 प्रतिशत वृद्धि हुई तथा जनसंख्या घनत्व 917 से बढ़कर 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात 78.8 प्रतिशत से घटकर 76.2 प्रतिशत तथा शहरी जनसंख्या 21.2 प्रतिशत से बढ़कर 23.8 प्रतिशत हो गई, जो संकेत करता है कि भागलपुर में शहरीकरण की प्रक्रिया धीरे–धीरे सशक्त हो रही है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि लिंगानुपात (879 से 880) तथा बाल लिंगानुपात (866 से बढ़कर 873) में वृद्धि अत्यंत सीमित रही, जिससे लैंगिक असंतुलन की स्थिति बनी हुई है। साक्षरता दर 52.55 प्रतिशत से बढ़कर 63.14 प्रतिशत हो गई, किन्तु ग्रामीण–शहरी तथा पुरुष–महिला साक्षरता के मध्य स्पष्ट अंतर विद्यमान रहा। प्रवासन एवं शहरीकरण ने भागलपुर की सामाजिक–आर्थिक संरचना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। कृषि संकट, बेरोजगारी तथा बेहतर शिक्षा–स्वास्थ्य सुविधाओं की चाह ने ग्रामीण जनसंख्या को नगरों की ओर आकर्षित किया, जिसके फलस्वरूप शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व, झुग्गी–बस्तियों का विस्तार, भूमि उपयोग अव्यवस्था एवं संसाधनों पर दबाव बढ़ा। समग्र रूप से, यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि भागलपुर का विकास केवल नगर–केंद्रित न होकर संतुलित होना आवश्यक है। ग्रामीण अधोसंरचना सुदृढ़ीकरण, महिला शिक्षा, योजनाबद्ध शहरी प्रबंधन, स्थानीय रोजगार सृजन तथा जनसंख्या नियंत्रण हेतु नीतिगत प्रयास अत्यंत अपेक्षित हैं। यह शोध भविष्य के योजनाकारों, नीति–निर्माताओं एवं भूगोलविदों के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करता है।

मुख्यः शब्द – ग्रामीण जनसंख्या, नगरीयकरण, प्रवासन, जनसंख्या घनत्व, साक्षरता दर

प्रस्तावना

जनसंख्या किसी भी प्रदेश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना का आधार होती है। किसी क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की संख्या, उनका वितरण, घनत्व, वृद्धि दर तथा ग्रामीण एवं नगर क्षेत्रों में उनका अनुपात, उस क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। भारत जैसे विशाल एवं विकासशील राष्ट्र में जनसंख्या का दबाव तीव्रता से बढ़ रहा है। विशेषतः बिहार राज्य में ग्रामीण भूभागों से नगर केन्द्रों की ओर जनसंख्या का प्रवाह तथा नगरीकरण की प्रक्रिया तेजी से प्रकट हो रही है। इन परिस्थितियों में भागलपुर जिला अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में सामने आता है, क्योंकि यहाँ एक ओर प्राचीन नगरीय परंपरा, व्यापारिक क्रियाएँ तथा गंगा तटीय संस्कृति विद्यमान है, वहीं दूसरी ओर व्यापक ग्रामीण परिक्षेत्र कृषि, पशुपालन तथा पारंपरिक व्यवसायों पर आधारित जीवन–पद्धति को संजोए हुए है।

जनगणना 2001 तथा 2011 के अनुसार, भागलपुर जिले की कुल जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि परिलक्षित होती है। वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 24.36 लाख थी, जो 2011 में बढ़कर 30.30 लाख हो गई। इसी अवधि में नगर क्षेत्रों की जनसंख्या का प्रतिशत 21.2 से बढ़कर लगभग 23.5 हुआ, जबकि ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात तुलनात्मक रूप से कम हुआ है। यह संकेत देता है कि भागलपुर में नगरीकरण की प्रक्रिया सक्रिय है, तथापि जनसंख्या का अधिकांश भाग अभी भी ग्रामीण अंचलों में निवास करता है। जनसंख्या घनत्व 917 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर होना भूमि पर बढ़ते मानवीय दबाव तथा प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ती निर्भरता का द्योतक है।

ग्रामीण एवं नगर क्षेत्रों में जनसंख्या के इस प्रकार के वितरण को समझना केवल सांख्यिकीय विश्लेषण भर नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के विविध पक्षों जैसे – प्रवासन, आजीविका, शिक्षा, स्त्री–पुरुष अनुपात, आवास व्यवस्था तथा जीवन–स्तर से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। अतः यह शोधकार्य 2001 से 2011 के दशक के दौरान भागलपुर जिले में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की संरचनात्मक विशेषताओं, वृद्धि प्रवृत्तियों, क्षेत्रीय विषमताओं तथा नगरीकरण से उत्पन्न प्रभावों का सम्यक् परीक्षण प्रस्तुत करेगा। यह

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management and Law
ISSN : 3048-8427
VOL. 1, ISSUE 1, JULY-SEPTEMBER 2024
Available Online : https://ijaescml.com/

अध्ययन भावी योजना–निर्माण, जनसांख्यिकीय नीतियों तथा सतत विकास हेतु एक उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है।

साहित्य समीक्षा

भागलपुर जिले की जनसंख्या संरचना, ग्रामीण–नगरीय वितरण तथा शहरीकरण की प्रवृत्तियों से संबंधित अनेक अध्ययन राष्ट्रीय स्तर पर किए गए हैं, यद्यपि जिला–स्तर पर इस विषय का विस्तृत एवं तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम प्राप्त होता है। जनगणना आयोग भारत (2001, 2011) द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदनों में भागलपुर सहित समस्त जनपदों की ग्रामीण–शहरी जनसंख्या, लिंगानुपात, साक्षरता तथा जनसंख्या घनत्व का तथ्यात्मक विवरण उपलब्ध है। प्रसाद (2008), सिन्हा एवं झा (2012) तथा सिंह (2015) के अध्ययनों में बिहार में हो रहे तीव्र नगरीकरण के कारणों को ग्रामीण निर्धनता, कृषि से घटती आय तथा रोजगार की कमी से जोड़ा गया है। संयुक्त राष्ट्र मानव बस्ती कार्यक्रम (UN–Habitat) एवं भारतीय मानव विकास प्रतिवेदन ने भी प्रतिपादित किया है कि छोटे तथा मध्यम नगरों वाले जिलों में जनसंख्या प्रवासन एवं अव्यवस्थित शहरी विस्तार सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं को जन्म देते हैं। कुछ अध्ययनों जैसे कुमार (2017) एवं आलोक (2019) ने भागलपुर नगर तथा उसके उपनगर क्षेत्रों में शहरी प्रसार, गंगा तटीय बसावट एवं अनौपचारिक श्रमिक प्रवासन का अध्ययन किया, परन्तु इनमें ग्रामीण–शहरी जनसंख्या संरचना का तुलनात्मक परीक्षण विस्तृत रूप में नहीं किया गया। अतः उपलब्ध साहित्य यह प्रतिपादित करता है कि भागलपुर जिले में 2001 से 2011 के मध्य ग्रामीण एवं नगर जनसंख्या के अनुपात, वृद्धि तथा संरचनात्मक परिवर्तनों पर ठोस तथा सम्यक् शोध की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्य

- भागलपुर जिले में 2001 एवं 2011 की जनगणना के आधार पर ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के वितरण, घनत्व तथा वृद्धि दर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण–नगरीय क्षेत्रों में लिंगानुपात, साक्षरता स्तर, प्रवासन तथा सामाजिक–आर्थिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों एवं असमानताओं को विश्लेषित करना।
- जनसंख्या वृद्धि एवं शहरीकरण के कारण उत्पन्न क्षेत्रीय दबाव, संसाधन संकट तथा भावी नियोजन की संभावनाओं का निर्धारण करना।

आँकडा स्रोत एवं शोध पद्धति

इस शोध हेतु मूलतः द्वितीयक (Secondary) आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनका संकलन भारत सरकार द्वारा प्रकाशित जनगणना प्रतिवेदन 2001 एवं 2011, जिला जनगणना पुस्तिका (District Census Handbook, Bhagalpur), बिहार आर्थिक सर्वेक्षण, भौगोलिक सांख्यिकी निदेशालय तथा जिला प्रशासनिक अभिलेखों से किया गया है। ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता दर तथा प्रवासन से संबंधित आँकड़ों को संकलित कर तालिकाओं, प्रतिशत परिवर्तन, वार्षिक वृद्धि दर, जनसंख्या घनत्व सूत्र एवं तुलनात्मक विश्लेषण विधि द्वारा संख्यात्मक रूप से व्याख्यायित किया गया है। शोध का स्वरूप वर्णनात्मक, तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक है, जिसमें आँकड़ों का विश्लेषण कर ग्रामीण–नगरीय असमानताओं, प्रवृत्तियों एवं शहरीकरण के प्रभावों का वैज्ञानिक परीक्षण प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

भागलपुर जिला बिहार राज्य के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित एक ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र है। इसका भौगोलिक विस्तार लगभग 2,569 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, तथा यह गंगा नदी के दक्षिणी तट पर अवस्थित होने के कारण उपजाऊ जलोढ़ मैदानों का निर्माण करता है। उत्तर में बांका एवं मुंगेर, दक्षिण में गोड्डा (झारखंड), पूर्व में कटिहार तथा पश्चिम में मुंगेर एवं खगड़िया जिले इसकी सीमा निर्धारित करते हैं। यह क्षेत्र 25°04′ से 25°30′ उत्तरी अक्षांश तथा 86°30′ से 87°30′ पूर्वी देशांतर के मध्य अवस्थित है। भागलपुर का प्रमुख नगर "रेशम नगरी" एवं "एंग्लिंग सिटी" के रूप में विख्यात है

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management and Law
ISSN : 3048-8427
VOL. 1, ISSUE 1, JULY-SEPTEMBER 2024
Available Online : https://ijaescml.com/

और यहाँ से गंगा नदी की धारा पूर्व की ओर मुड़ती है, जिससे यह व्यापार, मत्स्य उत्पादन तथा परिवहन गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बनता है।

जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है, जिसमें गर्मी तीव्र, वर्षा मध्यम से अधिक तथा शीत ऋतु मध्यम रूप से शीतल होती है। इस क्षेत्र की औसत वार्षिक वर्षा लगभग 1100–1200 मि.मी. होती है। मिट्टी प्रायः जलोढ़, गादयुक्त एवं कृषि योग्य है, जिसके कारण धान, मक्का, गेहूँ, सब्जियाँ एवं मछलीपालन यहाँ के प्रमुख आर्थिक आधार हैं। प्रशासनिक दृष्टि से भागलपुर जिला 3 उपमंडलों और लगभग 16 प्रखंडों में विभाजित है, जिनमें भागलपुर नगर निगम, सबौर, नाथनगर तथा कहलगाँव प्रमुख शहरी केन्द्र हैं। जनगणना 2011 के अनुसार, यहाँ की कुल जनसंख्या 30.30 लाख थी, जिसमें लगभग 76 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण तथा 24 प्रतिशत नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है। यह जनसंख्या वितरण, कृषि एवं गैर–कृषि गतिविधियों के अनुपात, संसाधन दवाब, प्रवासन तथा नगरीकरण की प्रवृत्तियों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। भौगोलिक स्थिति, गंगा तटीय विशेषताओं तथा ग्रामीणदृनगर संरचना के अनूठे मिश्रण के कारण भागलपुर इस अध्ययन के लिए एक आदर्श और प्रासंगिक क्षेत्र के रूप में उभरता है।

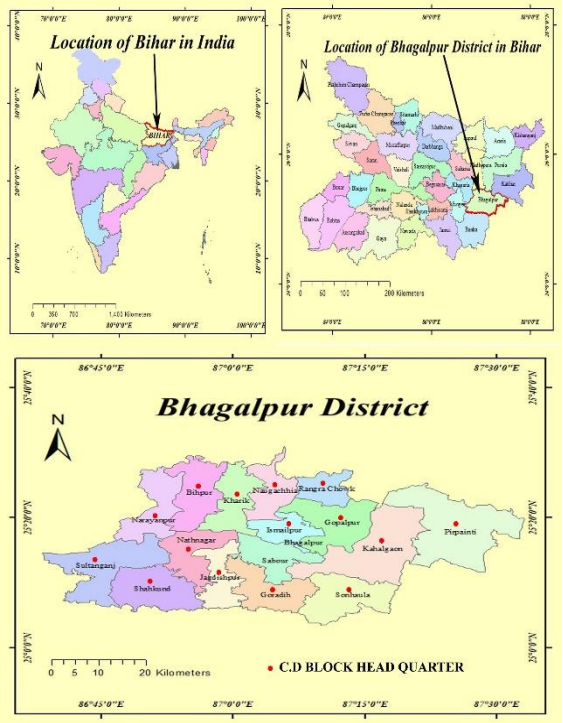

fig : Locational Map of Bhagalpur District

परिणाम एवं विश्लेषण

- **कुल जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति**

भागलपुर जिले में 2001 से 2011 के दशक के दौरान जनसंख्या वृद्धि एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय प्रवृत्ति के रूप में सामने आई। जनगणना 2001 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 24.36 लाख थी, जो 2011 में बढ़कर 30.30 लाख हो गई। अर्थात् एक दशक में लगभग 6 लाख से अधिक आबादी की वृद्धि दर्ज की गई, जो लगभग 24.2 प्रतिशत वृद्धि दर को दर्शाती है। यह वृद्धि केवल प्राकृतिक वृद्धि (जन्मदर अधिक होना) तक सीमित नहीं रही, बल्कि ग्रामीण जनसंख्या का शहरी केंद्रों जैसे भागलपुर नगर निगम, नाथनगर, सबौर, कहलगाँव आदि की ओर प्रवासन भी एक महत्वपूर्ण कारण रहा। इस अवधि में औद्योगिक गतिविधियाँ (जैसे – रेशम उद्योग, कहलगाँव NTPC, व्यापार, मत्स्य पालन, सेवा क्षेत्र), तथा शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार शहरी क्षेत्रों में केंद्रित रहा, जिसके फलस्वरूप नगरों में जनसंख्या तेजी से बढ़ी।

जनसंख्या वृद्धि का एक अन्य पहलू यह भी है कि इस बढ़ती आबादी ने भूमि, जल, आवास, स्वास्थ्य सेवाओं, परिवहन, स्वच्छता तथा रोजगार पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न किया। साथ ही, जनसंख्या घनत्व 2001 में 917 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 2011 में 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया, जो यह स्पष्ट करता है कि भागलपुर भौगोलिक दृष्टि से सीमित क्षेत्रफल होने के बावजूद जनसंख्या का बोझ तेजी से वहन कर रहा है। इस प्रकार, यह प्रवृत्ति भविष्य में संसाधन प्रबंधन, शहरी नियोजन और सतत् विकास के लिए गंभीर चिंताओं को जन्म देती है।

तालिका 1 : भागलपुर जिले की कुल जनसंख्या एवं वृद्धि दर (2001–2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकवार वृद्धि (प्रतिशत)	जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति / किमी^{2})
2001	24,36,093	—	917
2011	30,30,297	24.20 प्रतिशत	1182

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management and Law
ISSN : 3048-8427
VOL. 1, ISSUE 1, JULY-SEPTEMBER 2024
Available Online : https://ijaescml.com/

उपरोक्त तालिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि 2001 से 2011 के बीच भागलपुर जिले की जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में जहाँ कुल जनसंख्या 24,36,093 थी, वहीं 2011 में यह बढ़कर 30,30,297 हो गई, अर्थात् एक दशक में लगभग 24.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि केवल प्राकृतिक जन्मदर के कारण नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों की ओर बढ़ते प्रवासन, बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार की उपलब्धता का भी परिणाम है। इसी के साथ जनसंख्या घनत्व 917 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया, जो भूमि, जल संसाधन, आवास, परिवहन तथा आधारभूत संरचना पर बढ़ते दबाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस जनसंख्या वृद्धि का असर सबसे अधिक नगर क्षेत्रों जैसे भागलपुर नगर निगम, नाथनगर, सबौर और कहलगाँव में देखा गया, जहाँ औद्योगिक गतिविधियाँ, व्यापारिक सुविधाएँ और सेवा क्षेत्र तेजी से विकसित हुए। अतः तालिका यह सिद्ध करती है कि भागलपुर जिले में जनसंख्या वृद्धि एक सतत् तथा तीव्र होती प्रक्रिया है, जिसके सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव भविष्य की योजना और नीति निर्माण के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

- **ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या संरचना**

भागलपुर जिले की जनसंख्या संरचना में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के मध्य स्पष्ट भिन्नता देखी जाती है। जनगणना 2001 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या का लगभग 78.8 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता था, जबकि केवल 21.2 प्रतिशत जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रहती थी। दशक 2001–2011 के दौरान शहरीकरण की प्रक्रिया में वृद्धि हुई और 2011 तक ग्रामीण जनसंख्या घटकर 76.2 प्रतिशत तथा शहरी जनसंख्या बढ़कर 23.8 प्रतिशत हो गई। इसका अर्थ है कि यद्यपि भागलपुर मुख्यतः ग्रामीण स्वरूप वाला जिला है, फिर भी शहरी केंद्रों जैसे – भागलपुर नगर निगम, नाथनगर, सबौर एवं कहलगाँव में जनसंख्या का संकेन्द्रण बढ़ रहा है। कृषि पर आधारित आजीविका, सीमित आय तथा ग्रामीण अवसंरचना की कमी के कारण लोग शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, उद्योग तथा रोजगार की बेहतर संभावनाओं हेतु शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यह परिवर्तन यह भी दर्शाता है कि शहरी विस्तार धीरे–धीरे ग्रामीण क्षेत्रों की भूमि उपयोग संरचना को प्रभावित कर रहा है।

तालिका 2 : ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या (भागलपुर जिला – 2001 एवं 2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	प्रतिशत ग्रामीण	शहरी जनसंख्या	प्रतिशत शहरी
2001	24,36,093	19,18,000	78.8 प्रतिशत	5,18,093	21.2 प्रतिशत
2011	30,30,297	23,08,000	76.2 प्रतिशत	7,22,297	23.8 प्रतिशत

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

तालिका 2 स्पष्ट करती है कि भागलपुर जिले का जनसमूह अभी भी मुख्यतः ग्रामीण प्रकृति का है, परंतु दशक 2001 से 2011 के बीच शहरी जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2001 में जहाँ कुल जनसंख्या का केवल 21.2 प्रतिशत भाग नगर क्षेत्रों में था, वहीं 2011 तक यह बढ़कर 23.8 प्रतिशत हो गया। इसके विपरीत ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात 78.8 प्रतिशत से घटकर 76.2 प्रतिशत हो गया। यह परिवर्तन बताता है कि शहरीकरण की प्रक्रिया यद्यपि धीमी है, मगर निरंतर सक्रिय है। शहरी क्षेत्रों में बढ़ते औद्योगिक रोजगार, व्यापारिक गतिविधियाँ, उच्च शिक्षा संस्थान तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता ने ग्रामीण आबादी को अपनी ओर आकर्षित किया है। इस जनसंख्या परिवर्तन ने भूमि उपयोग पैटर्न में बदलाव, अव्यवस्थित शहरी बसावट, बढ़ते यातायात दबाव तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रम की कमी जैसी स्थितियाँ उत्पन्न की हैं। इस प्रकार ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या संरचना में यह बदलाव भागलपुर जिले के सामाजिक–आर्थिक रूपांतरण को दर्शाता है।

- **जनसंख्या घनत्व में वृद्धि**

भागलपुर जिले में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि एक गंभीर जनसांख्यिकीय प्रवृत्ति के रूप में सामने आई है। वर्ष 2001 में जहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर औसत जनसंख्या घनत्व 917 व्यक्ति था, वहीं 2011 में यह बढ़कर 1182 व्यक्ति प्रति किमी^{2} हो गया। इसका अर्थ है कि मात्र एक दशक में प्रति वर्ग किलोमीटर लगभग 265 व्यक्ति और बढ़ गए, जो कि जिले पर बढ़ते मानवीय दबाव को स्पष्ट करता है। इस वृद्धि का प्रमुख कारण तेज जनसंख्या वृद्धि, सीमित भौगोलिक क्षेत्रफल, ग्रामीण–शहरी प्रवासन तथा नगरों का

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management and Law
ISSN : 3048-8427
VOL. 1, ISSUE 1, JULY-SEPTEMBER 2024
Available Online : https://ijaescml.com/

फैलाव है। चूंकि भागलपुर गंगा के मैदानी भाग में स्थित एक उपजाऊ एवं व्यापारिक क्षेत्र है, इसलिए यहाँ बसावट सदैव घनी रही है, किन्तु 2001–2011 के दशक में यह घनत्व विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में तीव्रता से बढ़ा। बढ़ती आबादी का दवाब भूमि, आवास, जल, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सेवाओं पर गंभीर प्रभाव डाल रहा है। अतः जनसंख्या घनत्व में यह वृद्धि भविष्य के शहरी नियोजन, संसाधन प्रबंधन एवं सतत विकास के लिए चुनौती बनती जा रही है।

तलिका 3 : भागलपुर जिले में जनसंख्या घनत्व (2001–2011)

वर्ष	जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति/किमी^{2})	कुल जनसंख्या
2001	917	24,36,093
2011	1182	30,30,297

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

तालिका 3 दर्शाती है कि भागलपुर जिले का जनसंख्या घनत्व 2001 एवं 2011 के बीच उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। एक दशक में घनत्व 917 से बढ़कर 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो जाना यह संकेत करता है कि क्षेत्रफल स्थिर होने के बावजूद आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है। इसका मतलब यह हुआ कि भूमि पर रहने वालों की संख्या बढ़ने से प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता घट रही है। विशेष रूप से गंगा तटीय क्षेत्रों, नगर केंद्रों एवं मुख्य परिवहन मार्गों के आसपास बसावट सबसे अधिक घनी हो गई है। जनसंख्या घनत्व की इस वृद्धि का सीधा प्रभाव आवासीय क्षेत्रों के विस्तार, कृषि भूमि के संकुचन, जल–स्वच्छता संकट, कचरा प्रबंधन समस्या तथा ट्रैफिक दबाव के रूप में दिखाई देता है। यह प्रवृत्ति यदि इसी प्रकार जारी रही, तो भागलपुर के नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र दोनों ही जनसंख्या वहन क्षमता से अधिक बोझ उठाने के लिए विवश हो जाएंगे।

- **लिंगानुपात एवं बाल लिंगानुपात का विश्लेषण**

लिंगानुपात किसी भी समाज की सामाजिक संरचना, लैंगिक समानता एवं महिला स्थिति का महत्त्वपूर्ण संकेतक होता है। भागलपुर जिले में लिंगानुपात वर्षों से चिंताजनक स्थिति में रहा है। जनगणना 2001 में कुल लिंगानुपात मात्र 879 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष दर्ज किया गया, जो 2011 में बहुत हल्की वृद्धि के साथ 880 पर पहुँचा। यह सुधार अत्यंत न्यून है और समाज में स्त्री–पुरुष संतुलन की असमानता को स्पष्ट करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात शहरी क्षेत्रों की तुलना में थोड़ा बेहतर है, क्योंकि ग्रामीण परिवारों में पुत्री जन्म को कुछ हद तक स्वीकार्यता प्राप्त है, जबकि शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच होने के कारण लिंग–चयन तकनीकों का संभावित दुरुपयोग देखा गया है।

बाल लिंगानुपात (0–6 वर्ष आयु वर्ग) और भी अधिक संवेदनशील संकेतक माना जाता है क्योंकि यह समाज में बालिकाओं के जन्म, देखभाल एवं जीवन–मूल्य को सीधे दर्शाता है। वर्ष 2001 में बाल लिंगानुपात 866 था, जो 2011 में 873 तक पहुँचा। यद्यपि इसमें कुछ सुधार हुआ, फिर भी यह राष्ट्रीय औसत से कम है और यह संकेत करता है कि पुत्र वरीयता, बालिका भ्रूणहत्या, कमजोर पोषण एवं सामाजिक रूढ़िवादिता जैसे कारण अभी भी मौजूद हैं। यह स्थिति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि भागलपुर में महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत होने के बजाय संघर्षपूर्ण बनी हुई है।

तालिका 4 : भागलपुर जिले में लिंगानुपात एवं बाल लिंगानुपात (2001–2011)

सूचकांक	2001	2011	परिवर्तन
कुल लिंगानुपात (महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष)	879	880	+1
ग्रामीण लिंगानुपात	884	885	+1
नगरीय लिंगानुपात	873	876	+3
बाल लिंगानुपात (0–6 वर्ष)	866	873	+7

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

तालिका 4 से यह स्पष्ट होता है कि लिंगानुपात एवं बाल लिंगानुपात में दशक 2001–2011 के दौरान केवल सीमित सुधार हुआ है। लिंगानुपात 879 से बढ़कर 880 पहुँचना दर्शाता है कि भागलपुर में स्त्री–पुरुष जनसंख्या का संतुलन असंतोषजनक स्तर पर बना हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात शहरी

क्षेत्रों की तुलना में थोड़ा बेहतर (885) है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह अपेक्षाकृत कम (876) दर्ज किया गया है। बाल लिंगानुपात 866 से बढ़कर 873 तक पहुँचा है, जो संकेत करता है कि समाज में बालिकाओं के प्रति दृष्टिकोण में थोड़ा सकारात्मक परिवर्तन आया है, परंतु यह अभी भी आदर्श स्थिति से काफी दूर है। इसका कारण सामाजिक मानसिकता, पुत्र–मोह, भ्रूण लिंग परीक्षण का दुरुपयोग, और बालिका शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता है। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में लैंगिक असंतुलन एक निरंतर सामाजिक चुनौती है, जिसके समाधान हेतु जनजागरण, शिक्षा, स्वास्थ्य नीति एवं सशक्तिकरण उपायों की सख्त आवश्यकता है।

- **साक्षरता दर का विश्लेषण**

साक्षरता किसी भी समाज के शैक्षिक विकास, मानव संसाधन के स्तर और सामाजिक प्रगति का एक प्रमुख मापक है। भागलपुर जिले में 2001 से 2011 के दशक के बीच साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। वर्ष 2001 में कुल साक्षरता दर 52.55 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 63.14 प्रतिशत हो गई। यह वृद्धि लगभग 10.6 प्रतिशत अंक की है, जो दर्शाती है कि शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की पहुँच में सुधार हुआ है। पुरुष साक्षरता दर 2001 में 61.8 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 70.3 प्रतिशत हो गई, जबकि महिला साक्षरता दर 42.1 प्रतिशत से बढ़कर 55.4 प्रतिशत तक पहुँची। यद्यपि महिला साक्षरता में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई, फिर भी यह पुरुषों की तुलना में काफी कम है, जो सामाजिक संरचना में अभी भी लैंगिक अंतर को दर्शाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता दर लगभग 60 प्रतिशत है जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 75 प्रतिशत से अधिक पाई गई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा संबंधी संसाधन एवं संस्थान मुख्यतः नगरीय क्षेत्रों में केंद्रित हैं।

तालिका 5 : भागलपुर जिले में साक्षरता दर (2001–2011)

श्रेणी	2001 साक्षरता (प्रतिशत)	2011 साक्षरता (प्रतिशत)	वृद्धि (प्रतिशत)
कुल साक्षरता	52.55 प्रतिशत	63.14 प्रतिशत	+10.59 प्रतिशत
पुरुष साक्षरता	61.8 प्रतिशत	70.3 प्रतिशत	+8.5 प्रतिशत
महिला साक्षरता	42.1 प्रतिशत	55.4 प्रतिशत	+13.3 प्रतिशत
ग्रामीण साक्षरता	~49 प्रतिशत	~60 प्रतिशत	+11 प्रतिशत
शहरी साक्षरता	~68 प्रतिशत	~75 प्रतिशत	+7 प्रतिशत

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

तालिका 5 से स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में साक्षरता दर में सकारात्मक सुधार हुआ है, परंतु यह सुधार संतुलित नहीं है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर में अधिक सुधार हुआ है, फिर भी दोनों के बीच का अंतर अभी भी चिंताजनक है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर बढ़ा है, परंतु विद्यालयों की दूरी, आर्थिक स्थिति, बालश्रम, सामाजिक कुरीतियाँ तथा बालिका शिक्षा के प्रति उदासीनता जैसी समस्याएँ शिक्षा को बाधित करती हैं। दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों में बेहतर विद्यालय, कॉलेज, उच्च शिक्षा संस्थान एवं कोचिंग सुविधाएँ उपलब्ध होने से साक्षरता का स्तर अधिक पाया गया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि साक्षरता में यह वृद्धि केवल संख्या तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, और महिला शिक्षा को सुदृढ़ करना आवश्यक है, जिससे भागलपुर की मानव विकास सूचकांक में भी सुधार हो सके।

- **प्रवासन एवं शहरीकरण का प्रभाव**

भागलपुर जिले में प्रवासन और शहरीकरण ने जनसंख्या संरचना, सामाजिक स्वरूप और भूमि उपयोग पैटर्न को गहराई से प्रभावित किया है। 2001 से 2011 तक की अवधि में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर आने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है, जिसका मुख्य कारण कृषि से घटती आय, बेरोजगारी, बाढ़–सूखा जैसी प्राकृतिक समस्याएँ तथा शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सुविधाओं की उपलब्धता शहरी क्षेत्रों में अधिक होना है। भागलपुर नगर, कहलगाँव, सबौर और नाथनगर जैसे शहरों में औद्योगिक गतिविधियाँ (रेशम उद्योग, NTPC कहलगाँव, लघु व्यापार एवं सेवा क्षेत्र) एवं परिवहन सुविधाएँ प्रवासियों को आकर्षित करती हैं। इसके परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व, अनियोजित आवासीय कॉलोनियाँ, झुग्गी–बस्तियाँ, यातायात दबाव, जल एवं स्वच्छता संकट जैसी समस्याएँ बढ़ी हैं।

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management and Law
ISSN : 3048-8427
VOL. 1, ISSUE 1, JULY-SEPTEMBER 2024
Available Online : https://ijaescml.com/

प्रवासन का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि इससे शहरी अर्थव्यवस्था में श्रमबल की उपलब्धता, व्यापार विकास, सेवा क्षेत्र का विस्तार तथा सांस्कृतिक विविधता में वृद्धि हुई है। किन्तु इसका नकारात्मक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रम की कमी, वृद्ध एवं महिला–प्रधान जनसंख्या का अनुपात बढ़ना, और आर्थिक निर्भरता जैसे स्वरूपों में दिखाई देता है। इस प्रकार प्रवासन और शहरीकरण दोनों भागलपुर की अर्थव्यवस्था और समाज में परिवर्तन के प्रमुख कारक हैं, परन्तु इनके संतुलित एवं नियोजित प्रबंधन की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तालिका 6 : प्रवासन और शहरी जनसंख्या वृद्धि (भागलपुर – 2001 से 2011)

संकेतक	2001	2011	परिवर्तन
कुल शहरी जनसंख्या (प्रतिशत)	21.2 प्रतिशत	23.8 प्रतिशत	2.6 प्रतिशत
ग्रामीण जनसंख्या (प्रतिशत)	78.8 प्रतिशत	76.2 प्रतिशत	–2.6 प्रतिशत
कुल जनसंख्या	24.36 लाख	30.30 लाख	+24.2 प्रतिशत

स्रोत – NSSO, Census migration tables, and Census of India, 2011

तालिका 6 स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि एक दशक में शहरी जनसंख्या प्रतिशत 21.2 प्रतिशत से बढ़कर 23.8 प्रतिशत हो गया, जबकि ग्रामीण जनसंख्या अनुपात घटा है, जो प्रवासन एवं शहरी विस्तार का प्रत्यक्ष परिणाम है। जनसंख्या वृद्धि का बड़ा भाग स्वाभाविक (जन्मदर) के साथ–साथ ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में पलायन द्वारा संचालित रहा। शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और रोजगार के अवसरों ने युवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर आकर्षित किया। इससे जहां शहरी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था सशक्त हुई, वहीं अनियोजित शहरीकरण, बस्तियों का विस्तार, भूमि उपयोग में असंतुलन और पर्यावरणीय दवाब जैसे दुष्परिणाम भी सामने आए। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी, कृषि उपज में कमी और युवाओं का पलायन जैसी चुनौतियाँ उभरकर सामने आईं।

सुझाव

- **ग्रामीण विकास के द्वारा अनियंत्रित प्रवासन पर रोक**

भागलपुर जिले की अधिकांश जनसंख्या अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, विशेषकर सबौर, खरीक, नारायणपुर, गोराडीह एवं गोपालपुर जैसे प्रखंडों में। इन क्षेत्रों में कृषि प्रमुख आजीविका का साधन है, परंतु सिंचाई संसाधनों की कमी, बाजार सुविधाओं का अभाव और प्राकृतिक आपदाएँ (बाढ़–कटाव) किसानों को आर्थिक रूप से कमजोर बनाती हैं। परिणामस्वरूप लोग बेहतर रोजगार और जीवन सुविधाओं की तलाश में नगर केंद्रों की ओर पलायन कर रहे हैं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई नलकूप, ग्रामीण सड़कें, मंडी व्यवस्था, कृषि आधारित लघु उद्योग (दुग्ध, मछली, तसर रेशम आदि) और ग्रामीण शिक्षा–स्वास्थ्य सेवाएँ मजबूत की जाएँ, ताकि संतुलित विकास हो सके और अनावश्यक प्रवासन पर अंकुश लगाया जा सके।

- **औद्योगीकरण और रोजगार के स्थानीय अवसरों का विकास**

भागलपुर "तसर रेशम नगरी" के नाम से प्रसिद्ध है, जबकि कहलगाँव स्थित NTPC जैसी औद्योगिक इकाइयाँ भी इसे आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बनाती हैं। यदि रेशम उद्योग, हथकरघा, मछली पालन, सूती वस्त्र और कृषि–आधारित प्रसंस्करण इकाइयों को आधुनिक तकनीक, वित्तीय सहायता और विपणन सुविधाएँ प्रदान की जाएँ, तो स्थानीय स्तर पर बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न किया जा सकता है। विशेषकर नाथनगर, चंपानगर, बरारी, शाहकुंड और कहलगाँव क्षेत्रों में Skill Development Centres, प्रशिक्षण संस्थान एवं महिला स्वयं सहायता समूहों (SHG) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इससे ग्रामीण युवाओं और महिलाओं दोनों को आर्थिक स्वावलंबन मिलेगा और शहर की ओर प्रवासन कम होगा।

- **शहरीकरण को नियोजित बनाने के लिए बेहतर नगरीय प्रबंधन**

भागलपुर नगर निगम क्षेत्र, बरारी, तातारपुर, अम्बिका प्रसाद घाट, आदमपुर जैसे क्षेत्रों में तेजी से शहरी विस्तार हो रहा है, लेकिन यह विकास अव्यवस्थित, बिना नियोजन और संसाधनों पर अत्यधिक दबाव के साथ हो रहा है। जलभराव, ट्रैफिक जाम, गंगा तटीय अतिक्रमण, सीवरेज की कमी और झुग्गी बस्तियों का फैलाव यहाँ की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इसलिए आवश्यक है कि भागलपुर नगर का GIS आधारित मास्टर प्लान लागू किया जाए, गंगा नदी किनारे व्यवस्थित नदीतट विकास किया जाए, नालों की सफाई,

ड्रेनेज सिस्टम, शहर बस सेवा और साइकिल ट्रैक जैसी सुविधाएँ विकसित की जाएँ। इससे शहरी जीवनस्तर बेहतर होगा और भविष्य के लिए टिकाऊ शहरी ढाँचा तैयार हो सकेगा।

- **महिला शिक्षा और लिंगानुपात सुधार के लिए सामाजिक सुधार**

भागलपुर के कई ग्रामीण प्रखंडों जैसे कि खरीक, इस्माइलपुर, कहलगाँव और नारायणपुर में महिला साक्षरता दर कम तथा बाल लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत से नीचे है। परिवारों में अब भी पुत्र वरीयता, दहेज जैसी कुरीतियाँ और बाल विवाह जैसी सामाजिक बाधाएँ मौजूद हैं। इन स्थितियों को सुधारने के लिए कन्या शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति, साइकिल योजना, कौशल प्रशिक्षण केंद्र खोलना, गाँव स्तर पर "बेटी जनम उत्सव" जैसे कार्यक्रम चलाना और भ्रूण लिंग परीक्षण पर सख्त निगरानी आवश्यक है। यदि भागलपुर में विक्रमशिला से प्रेरित "नारी शिक्षा मॉडल" अपनाया जाए, तो महिला साक्षरता के साथ–साथ सामाजिक सम्मान भी बढ़ाया जा सकता है।

- **गंगा तटवर्ती बाढ़–प्रभावित क्षेत्रों के लिए विशिष्ट योजना**

भागलपुर के नवगछिया, बिहपुर, इस्माइलपुर, गोपालपुर और रंगरा चौक जैसे गंगा तटवर्ती क्षेत्रों में हर वर्ष बाढ़ और नदी कटाव की समस्या होती है। इससे किसानों की भूमि नष्ट होती है, फसलें बर्बाद होती हैं और लोग विस्थापित होकर भागलपुर शहर एवं अन्य कस्बों की ओर पलायन करने को मजबूर होते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु सुरक्षित तटबंध, ऊँचे राहत शिविर, नाव बचाव दल, कटावरोधी उपाय, तथा बाढ़ के बाद त्वरित राहत कार्य (मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना) को मजबूत किया जाना चाहिए। इससे स्थायी प्रवासन कम होगा और लोग अपने मूल स्थान पर जीवन पुनर्स्थापित कर सकेंगे।

निष्कर्ष

भागलपुर जिले का जनसांख्यिकीय परिदृश्य 2001 से 2011 के दशक के बीच उल्लेखनीय परिवर्तन से गुजरा है। इस अवधि में कुल जनसंख्या में लगभग 24 प्रतिशत वृद्धि हुई, जिससे जनसंख्या घनत्व 917 से बढ़कर 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। यह संकेत करता है कि सीमित भू–क्षेत्रफल के भीतर आबादी का दबाव निरंतर बढ़ रहा है। जनसंख्या का बड़ा भाग अब भी ग्रामीण अंचलों में केंद्रित है, परंतु शहरी जनसंख्या की भागीदारी 21.2 से बढ़कर 23.8 प्रतिशत होने से यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर में शहरीकरण धीरे–धीरे गति पकड़ रहा है। कृषि से घटती आय, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार एवं उद्योग की बेहतर उपलब्धता ने ग्रामीण आबादी को शहरों की ओर आकर्षित किया, जिससे प्रवासन एक सशक्त आर्थिक–सामाजिक कारक के रूप में उभरकर सामने आया। लिंगानुपात एवं बाल लिंगानुपात के आँकड़े बताते हैं कि महिला स्थिति अभी भी सामाजिक रूप से कमजोर है। यद्यपि 2001 से 2011 के बीच इनमें हल्का सुधार हुआ, फिर भी 880 का कुल लिंगानुपात और 873 का बाल लिंगानुपात सामाजिक सोच, पुत्र–प्राथमिकता तथा महिला शिक्षा की कमी की ओर संकेत करता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति अवश्य हुई कृ कुल साक्षरता 52.55 प्रतिशत से बढ़कर 63.14 प्रतिशत तक पहुँची, लेकिन ग्रामीण एवं शहरी तथा पुरुष एवं महिला साक्षरता के बीच का अंतर आज भी व्यापक बना हुआ है। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर और सुविधाएँ बेहतर हैं, जबकि ग्रामीण भागों में विद्यालयों की कमी, गरीबी, बाल श्रम तथा सामाजिक रूढ़िवादिता शिक्षा विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

संपूर्ण विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि भागलपुर जनसंख्या विस्तार, शहरीकरण और सामाजिक परिवर्तन के संक्रमणकाल से गुजर रहा है। यदि विकास केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित रहा तो ग्रामीण असंतुलन, प्रवासन, बेरोजगारी और संसाधन–संकट जैसी समस्याएँ और तीव्र हो सकती हैं। इसलिए आवश्यक है कि योजनाएँ संतुलित दृष्टिकोण से बनाई जाएँ, जहाँ ग्रामीण आधारभूत सुविधाओं का विकास, महिला शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, रोजगार सृजन, योजनाबद्ध शहरीकरण तथा जन–जागरूकता को समान प्राथमिकता मिले। ऐसा करने पर ही भागलपुर जिले का विकास समग्र, सतत् और सामाजिक रूप से न्यायोचित हो सकेगा।

संदर्भ सूची

- Alam, M. & Singh, S. (2019). Socio-economic Impact of Migration in Bhagalpur District. Geo-Economic Review, 14(2), 112–120.
- Aayog, NITI (2011 & 2015). India Human Development Report. Planning Commission of India.
- Bhagalpur District Official Website. https://bhagalpur.nic.in
- Bihar Economic Survey (2005, 2010, 2012). वित्त विभाग, बिहार सरकार।
- Census of India (2001 & 2011). District Census Handbook: Bhagalpur, Series 11. Registrar General & Census Commissioner, Government of India.
- Census2011 Portal. Bhagalpur District Demography. https://www.census2011.co.in/district/76-bhagalpur.html
- Data.gov.in (2001). Final Population Totals – Bhagalpur District.
- District Statistical Handbook (Bhagalpur, 2001–2011). Planning & Development Department, Government of Bihar.
- Kumar, Ajay (2015). बिहार में नगरीकरण एवं प्रवासन का भूगोलिक अध्ययन. राजकमल प्रकाशन, पटना।
- Prasad, Ravindra (2008). ग्रामीण विकास एवं जनसंख्या परिवर्तनों का अध्ययन – भागलपुर जिला. टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय।
- Singh, R.B. & Sinha, S. (2012). Urban Growth and Demographic Change in Eastern Bihar. Indian Journal of Regional Studies, 29(3), 45–57.
- Statistical Handbook, Bhagalpur. Planning & Development Department, Government of Bihar.
- UN-Habitat (2010). Urbanization and Migration in Developing India. United Nations Human Settlements Programme.
- VillageInfo Census Data (Bhagalpur Blocks). https://villageinfo.in/bihar/bhagalpur
- Vikramshila Research Paper Series (2019). भागलपुर क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना पर आधारित अध्ययन।